# साहित्येतिहास - 1

DDE

Submitted By:
Dr. Mango Rani
Associate Professor
Directorate of Distance Education
Kurukshtra University
Kurukshetra - 132119

Programme
BA – General

Class III

Subject : Hindi

- इतिहास का शाब्दिक अर्थ – 'ऐसा ही था' या 'ऐसा ही हुआ'।
- साहित्येतिहास से अभिप्राय – साहित्यिक रचनाओं का ऐतिहासिक **दृष्टि** से अध्ययन अर्थात् साहित्यकारों की तत्कालीन स्थितियों, परिस्थितियों एवं परम्पराओं को समझना।
- **ष**

- हिन्दी साहित्येतिहास को जानने के लिए मुख्य बिन्दु :
  - साहित्यकारों की प्रकाशित और अप्रकाशित रचनाऐं
  - साहित्यकारों व साहित्यिक रचनाओं की परिचायक कृतियाँ
  - काल–निर्धारण व रचना काल की निर्णायक ऐतिहासिक सामग्री, जैसे– शिलालेख, वंशावलियाँ और प्रामाणिक उल्लेख आदि
  - साहित्य के विभिन्न युगों एवं उनकी विभिन्न धाराओं, प्रवृत्तियों एवं आन्तरिक ओर बाह्य परिस्थितियों पर प्रकाश डालने वाले अनुसन्धानपरक ग्रन्थ

- साहित्य के इतिहास की प्रमुख समस्याएँ
  - काल विभाजन
  - नामकरण
- आचार्य नगेन्द्र के अनुसार काल विभाजन तथा नामकरण के छः आधार–
  - शासन काल तथा शासक के अनुसार जैसे अंग्रेजी साहित्य में ऐलिजाबेथ युग।
  - ऐतिहासिक कालक्रम के अनुसार जैसे आदिकाल, मध्यकाल, संक्रान्ति काल, आधुनिक काल इत्यादि।
  - लोकनायक तथा उसके प्रभाव काल के अनुसार जैसे बंगला साहित्य में चैतन्य काल।
  - साहित्य नेता एवं उसके प्रभाव के आधार पर जैसे हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु युग।
  - **राष्ट्रीय**, सामाजिक अथवा सांस्कृतिक घटना या आन्दोलन के आधार पर, जैसे पुनर्जागरणकाल, भक्तिकाल, स्वातन्त्रयोन्तर काल आदि।
  - साहित्यिक प्रवृत्ति के नाम पर युग जैसे रोमानी युग, छायावाद युग, रीतिकाल आदि।

# हिन्दी साहित्य का काल–विभाजन

- आचार्य शुक्ल के विचारानुसार–

1. आदिकाल (वीरगाथा काल) – संवत् 1050 से 1375 तक
2. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) – संवत् 1375 से 1700 तक
3. उत्तर मध्य काल (रीतिकाल) – संवत् 1700 से 1900 तक
4. आधुनिक काल (गद्यकाल) – संवत् 1900 से आज तक

- डॉ. नगेन्द्र के विचारानुसार –

1. आदिकाल – सातवीं शती के मध्य से चौदहवीं शती के मध्य तक।
2. भक्तिकाल – चौदहवीं शती के मध्य से सत्रहवीं शती के मध्य तक।
3. रीतिकाल – सत्रहवीं शती के मध्य से उन्नीसवीं शती के मध्य तक।
4. आधुनिक काल – उन्नीसवीं शती के मध्य से अब तक।

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के विचारानुसार चार कालों के नाम–
  - वीरगाथा काल
  - भक्तिकाल
  - रीतिकाल
  - आधुनिक काल

# विभिन्न युगों के नामकरण की समस्याएँ

1. वीरगाथा काल नामकरण अस्वीकृत
   - कारण
     - किसी एक प्रवृत्ति को प्रमुखतया प्रतिनिधि प्रवृत्ति मानना असम्भव।
     - वीरगाथाएँ जिनके आधार पर नामकरण, वे या तो अप्राप्य या परवर्तीकाल की रचनाऐं।
     - साहित्य के कथ्य और माध्यम के रूपों की विविधता और अव्यवस्था।
2. भक्तिकाल नामकरण यथावत् स्वीकृत
3. रीतिकाल नामकरण विवादस्पद
   - कारण
     - रीतितत्त्व प्रमुख या श्रृंगार तत्त्व
     - श्रृंगार सार्वभौम तत्त्व हैं, सभी युगों में इसका प्राधान्य, इसीलिए 'श्रृंगार काल' कहना अनुचित।
     - रीतितत्त्व ही प्रमुख क्योंकि 18वीं और 19वीं शताब्दी में कवियों का ध्यान प्रमुख रूप से काव्य के निरूपण की ओर
     - लक्षण ग्रन्थों की रचना
4. आधुनिक काल नामकरण यथावत् स्वीकृत

Thank You